दिनांक 10 अक्टूबर, 2010 को इलाहाबाद में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन

———————————

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के शताब्दी वर्ष पर आयोजित इस कार्यक्रम में आप लोगों के बीच आकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। आप सभी लोगों को शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सर्वप्रथम मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

किसी भी संस्था के लिये सौ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इतिहास के दायरे में यह सौ साल और भी मूल्यवान होते है। वर्तमान के धरातल पर खड़े होकर जब हम अपनी विरासत या अतीत को निहारते हैं तब बहुत कुछ बदला हुआ नजर आता है, बहुत कुछ छूटता हुआ नजर आता है। लेकिन अपने वर्तमान का लालित्य, उसकी ललक ही बेहतरी की तलाश में बांधे भी रहता है। यही प्रकृति का नियम भी है। हम सब भी उसी विधान से संचालित होते हैं।

आप सब जानते हैं कि राष्ट्र को सुसंस्कृत, विकसित और समृद्धशाली बनाने के लिये यह आवश्यक है कि हमारी राष्ट्रभाषा समृद्ध हो। मुझे खुशी है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन इस दिशा में

निरन्तर कार्य करता रहा है। साहित्य के माध्यम से संस्कृति, संस्कार और राष्ट्रीयता के भाव आये। जीवन के सम्पूर्ण कार्यकलापों में राष्ट्रभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग हो। हिन्दी जन–जन की भाषा बने। हमारे सरकारी कार्यालयों, शिक्षा संस्थानों, उद्योगों एवं न्यायालयों में सभी कार्य हिन्दी में हो। इस दिशा में हम सब को मिलकर प्रयास करने होंगे।

स्वतंत्रता संग्राम में भी हिन्दी भाषा का पत्रिकारिता तथा लेखन के माध्यम से योगदान रहा है, जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। लोक कवियों, जुझारू पत्रकारों तथा क्रांतिकारी रचनाकारों ने

इसी हिन्दी भाषा के माध्यम से लोक जागरण का महान कार्य किया। हिन्दी का सम्मान ही स्वतंत्र एवं लोकतंत्रीय भारत की अस्मिता है।

हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एकता की वह सशक्त प्रतीक भाषा है जो उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक हमारे देश के नागरिकों को एक सूत्र में जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि——"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है।"

स्वतंत्रता के पश्चात् सरदार वल्लभ भाई पटेल और पुरूषोत्तम दास टण्डन की कोशिशों से हिन्दी को राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त

हुआ। हिन्दी के युग प्रर्वतक साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की यह पंक्तियां इसकी महत्ता को स्वयं प्रतिपादित करती हैं–

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।

देश के महानतम कवि गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने भी कहा था कि– ''वास्तव में भारतवर्ष में अन्तप्रांतीय व्यवहार के लिए उपयुक्त राष्ट्रीय भाषा हिन्दी ही है।''

भाषा मनुष्य के भावों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। मेरे विचार में जो साहित्य मनुष्य के हृदय की संवेदनाओं को नहीं छू जाता वह जीवन प्रवाह को कभी बदल भी नहीं पाता। वही साहित्य

जन साहित्य बन सकता है जो मनुष्य को जाति, धर्म व सम्प्रदाय की संकीर्णता से ऊंचा उठाकर उसमें नई चेतना दे सके, उसमें आत्म बल का संचार करे ऐसा साहित्य ही समाज की अक्षय निधि है। अंततः भावों की गहराई और मानवीय संवेदनाएं ही साहित्य सृजन का मूल आधार बनकर हमारी संवेदनाओं से जुड़ती है।

हिन्दी भाषा और साहित्य के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हमारा समाज आज भी जाति, धर्म और सम्प्रदाय के बंधन में क्यों है? यह प्रश्न साहित्य से समाधान चाहते हैं। महान कार्य के लिए विशाल हृदय होना चाहिए। हिन्दी में साहित्य का सृजन सचमुच महान कार्य

है। हिन्दी सेवा का अर्थ करोड़ों की सेवा करना है। इसका अवसर मिलना सौभाग्य की बात है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार तथा इसको जन–जन की भाषा बनाने के दिशा में सराहनीय कार्य कर रहा है। सम्मेलन के संस्थापकों से लेकर अब तक के सफर में जिन–जिन महापुरूषों का योगदान हैं, उनके हम सदैव भावनात्मक ऋणी रहेंगे और इसी नाते सम्मेलन के उन्नायक विशेष डा0 प्रभात शास्त्री तक और वर्तमान में श्री विभूति मिश्र की सार्थक परम्परा, राष्ट्रभाषा और देवनागरी के प्रति मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इस तीन दिवस तक चलने वाले शताब्दी समारोह में आप सभी विद्वतजनों के विचारों से जानकारी प्राप्त करेंगे एवं अन्य सार्थक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को देखेंगे और सुनेंगे। निश्चय ही इन समस्त कार्यक्रमों की केन्द्रीयता 'हिन्दी भाषा और साहित्य' के सौ सालों का लेखा–जोखा होगा। आज हमें सिद्धान्त से ज्यादा व्यावहारिक रूप से हिन्दी के बारे में सोचने समझने और विचार–विमर्श एवं अमल करने की आवश्यकता है। तभी हम सब मिलकर इन आयोजनों की सफलता रेखांकित कर सकेंगे।

एक बार पुनः आप लोगों ने जो मुझे यहाँ आमंत्रित किया, उसके लिये बार–बार आभार व्यक्त करते हुए इस महान और ऐतिहासिक समारोह का उद्घाटन करता हूँ।

धन्यवाद – नमस्कार।